पेन्टाटयूक

अध्याय 3

स्वर्गलोक खोया और पाया

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठयक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
साहित्यिक संरचना 1
रूप –रेखा 2
वाटिका में 2
समृद्ध की गई परिस्थिति 2
शापित की गई परिस्थिति 2
वाटिका से बाहर 2
समरूपता 3
आरम्भ और अंत 3
मध्य भाग 4
वास्तविक अर्थ 5
वाटिका 5
पहचान 5
पवित्रता 7
विश्वासयोग्यता 9
अदन में 10
कनान में 10
परिणाम 12
मृत्यु 12
पीड़ा 13
निष्कासन 13
वर्तमान प्रासंगिकता 15
आरम्भ 15
पौलुस 15
मत्ती 16
निरंतरता 17
पौलुस 17
याकूब 18
परिपूर्णता 18
रोमियों 18
प्रकाशितवाक्य 19

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार.. 20

प्रस्तावना

मेरे ख्याल से हर व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी ऐसा मौका आता है जब उससे कोई चीज़ गुम हो जाती है। वह कोई पुस्तक हो सकती है या शायद आपके घर की चाबी। मैं आपके बारे में तो नहीं जानता, लेकिन जब भी मुझसे कोई चीज़ गुम हो जाती है, तो, सबसे पहला काम जो मैं करता हूँ वह यह है, कि अपने दिमाग में एक –एक कदम पीछे की तरफ जाता हूँ। और यह याद करने की कोशिश कि मैंने जिस वस्तु को खोया है उसे कहाँ रखा है। मैं धीरे-धीरे समय में पीछे जाता हूँ, और जब मैंने पीछे जा चूका होता हूँ, तब जो गलती मैंने की थी उसे सावधानीपूर्वक सुधारता हूँ। चाबियों को मेज़ पर रखता हूँ जहाँ उन्हें होना चाहिए, और पुस्तक वापस अलमारी में जाती है। मैंने जो किया था उस पर वापस पीछे जाना और उन्हें सुधारना, मेरे हिसाब से गुम हुई चीज़ों को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है।

हमने इस पाठ का शीर्षक रखा है, "स्वर्गलोक खोया और पाया," और हम अपना ध्यान उत्पत्ति 2:4-3:24 पर केंद्रित करेंगे, जो कि अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के पाप में गिरने की कहानी का वर्णन करती है। हम देखेंगे कि मूसा ने आदम और हव्वा द्वारा स्वर्गलोक को खो दिए जाने के बारे में लिखा, ताकि इस्राएल को प्रोत्साहित करे कि वे पीछे जाकर अदन की वाटिका में आदम और हव्वा द्वारा उठाये गए गलत कदम पर गौर करें और अपने जीवन में सुधार लाते हुए उस गलती को न दोहराए। इस्राएली स्वर्गलोक को दोबारा प्राप्त करने की उम्मीद तभी कर सकते थे, जब वे आदम हव्वा की कहानी से शिक्षा लेते हुए उनकी गलती को ना दोहराए, और यहाँ हम यह भी देखेंगे कि जो प्रोत्साहन मूसा ने इस्राएल को दिया था, परमेश्वर का वही संदेश आज हमारे लिए भी है। आदम और हव्वा के द्वारा उठाये गए क़दमों में पीछे जाने और उनकी गलती को सुधारने के द्वारा, मसीही लोग भी आज स्वर्गलोक को प्राप्त कर सकते हैं। उत्पत्ति 2 और 3 की हमारी जाँच तीन भागों में विभाजित होती है: सबसे पहले, हम इन अध्यायों की साहित्यिक संरचना की जाँच करेंगे। दूसरा, हम इन अध्यायों के वास्तविक अर्थ पर ध्यान-केंद्रित करेंगे, ताकि इस बात को समझ सके कि मूसा के इस तरह से इस्राएल के वंशजों के लिए लिखने के पीछे क्या कारण था । और तीसरा, हम अपना ध्यान वर्तमान प्रासंगिकता की तरफ केन्द्रित करेंगे और यह जानने की कोशिश करेंगे इस अध्याय को हमारे जीवन में लागू करने में नया नियम किस तरह से हमारा मार्ग दर्शन करता है। आइए अपने अध्याय की साहित्यिक संरचना के साथ शुरु करते हैं।

साहित्यिक संरचना

यद्यपि उत्पत्ति 2-3 एक लम्बा अध्याय है और कई विषयों का वर्णन करता है, परन्तु वास्तव में यह एक संगठित कहानी भी है। इन अध्यायों को सही रीति से समझने के लिए, हमें इन दोनों अध्यायों को एक साहित्यिक इकाई के रूप में देखने की आवश्यकता है। उत्पत्ति 2-3 में साहित्यिक संरचना की जाँच के दौरान हमारे पास दो प्रमुख मुद्दे होंगे: सबसे पहले, हम अध्यायों के प्रमुख हिस्सों की समीक्षा करेंगे ; और दूसरा हम इन विभिन्न भागों के बीच पाई जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण समरूपताओं पर टिप्पणी करेंगे ताकि उस बात की गहराई को समझ सके जिसे मूसा इस्राएल से कह रहा था। आइए उत्पत्ति 2-3 की साहित्यिक संरचना के अवलोकन के साथ शुरु करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रूप –रेखा

2:4 के पहले भाग में दिखाई देने वाले उस संक्षिप्त शीर्षक के अलावा, ये दोनों अध्याय चार प्रमुख भागों में विभाजित होते हैं, और इन चार प्रमुख भागों को विषयों और पात्रों में बदलावों के साथ दर्शाया गया है। हमें इन चारों भागों पर विचार करना चाहिए और उनके मूल विषय-वस्तु को सारांशित करना चाहिए।

वाटिका में

हमारी कहानी का पहला नाटकीय चरण 2:4-17 में प्रकट होता है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखा था। ये पद अदन की वाटिका के मनोरम दृश्य के साथ शुरु होते हैं, और जैसे की यह अध्याय हमें बताता है, कि पूरी वाटिका आदम के निवास और काम करने के लिए एक शानदार जगह थी। फिर इस भाग का संबंध आदम की सृष्टि और वाटिका में काम करने की उसकी नियुक्ति तक सीमित हो जाता है। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा आदम को यह महान सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसे परमेश्वर की ओर से वाटिका की देख-रेख करनी थी।

समृद्ध की गई परिस्थिति

हमारी कहानी के दूसरा चरण 2:18-25 में पाया जाता है, जिसको हम मानवता की "समृद्ध की गई परिस्थिति।" भी कहते है। इसमें परमेश्वर ने आदम के जीवन को और भी अधिक आशीषों से भरा। यह भाग एक नई समस्या के साथ शुरु होता है जिसके बारे में 2:18 में पढ़ा जा सकता है। वहाँ, परमेश्वर ने आदम को देखा और इन वचनों को कहा:

> मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।" (उत्पत्ति 2:18)।

2:18-25 का बाकी का हिस्सा बताता है कि परमेश्वर ने इस समस्या का समाधान कैसे किया। आदम ने जानवरों के बीच एक साथी की तलाश की, लेकिन अंत में, परमेश्वर ने एक स्त्री को बनाया और उसे आदम के पास लाया। इस प्रकार से, परमेश्वर ने उस अद्‌भुत सृष्टि को और ज्यादा समृद्ध किया जिसे उसने पहले ही से आदम और हव्वा के लिए बनाया था।

शापित की गई परिस्थिति

हमारी कहानी का तीसरा चरण 3:1-21 में पाया जाता है, जिसे हम कहेंगे मानवता की "परिस्थिति को शापित किया जाना।" यह कहानी 3:1 में एक नए विषय और पात्र, बहकाने वाले सर्प (सांप) के प्रवेश के साथ शुरु होती है। इस बिन्दु से आगे, 3:1-21 में हम सर्प के बहकावे और उसके बहकावे के नतीजों के विषय में पढ़ते है। हव्वा सर्प के बहकावे में आ जाती है और उस वर्जित फल को स्वयं और आदम को खिलाती है जिसे खाने को परमेश्वर ने मना किया था और इस तरह से वे दोनों परमेश्वर द्वारा शापित किये गए।

वाटिका से बाहर

इस अध्याय के व्यापक ढाँचे में चौथा तत्व 3:22-24 में वर्णित है, जिसका शीर्षक हमने रखा है मनुष्य का "वाटिका से बाहर निकाला जाना "। इस भाग को, प्रस्तुत विषय में एक महत्वपूर्ण बदलाव के द्वारा चिह्नित किया गया है। यहाँ हम परमेश्वर को जीवन के वृक्ष से जुड़ी समस्या के बारे में बताते हुए पाते हैं। 3:22 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> मनुष्य... ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।" (उत्पत्ति 3:22)।

आदम द्वारा इस वृक्ष के फल को खाने की संभावित समस्या से निपटने के लिए, परमेश्वर ने आदम को वाटिका से बाहर निकाल दिया और अदन के प्रवेश द्वार की रक्षा के लिए करुबों और ज्वलंत तलवार को तैनात कर दिया। उस समय से लेकर आज के दिन तक , परमेश्वर द्वारा प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप किये बिना मनुष्य अदन की वाटिका तक पहुँच नहीं सकता।

समरूपता

इन अध्यायों के चार प्रमुख विभाजनों को ध्यान में रखते हुए, हम उत्पत्ति 2-3 पर ज्यादा बारीकी से गौर करेंगे ताकि इन अध्यायों में दर्शाए गए नाटकीय समरूपता को देख सके । इन भागों में विभिन्न तत्वों की तुलना करके, मूसा ने अपनी कहानी की प्रमुख बातों को उजागर किया था। इस कहानी की समरूपताओं को समझने के लिए, हम पहले उस समानता की ओर देखेंगे जो हमारी कहानी की शुरुआत और अंत के बीच मौजूद है, और फिर हम कहानी के मध्य भागों की समरूपता पर गौर करेंगे। आइए पहले इस अध्याय के आरम्भ और अंत पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

आरम्भ और अंत

जैसा कि हम देखेंगे, उत्पत्ति 2:4-17 और उत्पत्ति 3:22-24 के मध्य कम से कम तीन महत्वपूर्ण तरीक़ों से तीव्र विरोधाभास नज़र आता हैं।

पहला विरोधाभास स्थान के विषय देखने को मिलता है। यह कहानी 2:7 में शुरु होती है जिसमें परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका के भीतर रखा। आदम ईश्वरीय आशीषों से भरपूर स्थान में रहता एवं काम करता था; अद्भुत वनस्पति, जीवन देने वाला पानी, कीमती धातुओं और पत्थरों ने उसे चारों ओर से घेर रखा था। इसके विपरीत, 3:24 में कहानी की समाप्त होते –होते परमेश्वर आदम और हव्वा को वाटिका से बाहर निकाल देता है। यह भौगोलिक अंतर स्पष्ट कर देता है कि पृथ्वी पर मानव जाति के लिए सबसे चाहने योग्य स्थान अदन की वाटिका था।

प्रत्येक भाग में दूसरा विरोधाभास वाटिका के विशेष वृक्षों पर है। यद्यपि 2:4-17 दो वृक्षों का वर्णन करता है, जीवन का वृक्ष और भले एवं बुरे के ज्ञान का वृक्ष, लेकिन जब हम 2:17 पर आते हैं तो ध्यान केवल एक वृक्ष की ओर मुड़ जाता है, ज्ञान का वृक्ष। इस वृक्ष के पास मानव जाति को भलाई एवं पाप का अनुभवपरक ज्ञान देने की शक्ति थी। यह उन चीज़ों को देखने के लिए उनकी आँखों को खोल सकता था जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थीं।

इसके विपरीत, 3:22-24 में कहानी की समाप्ति पर, परमेश्वर को अब भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से मतलब नहीं है, बल्कि उनकी बातें विशेष रूप से जीवन के वृक्ष के इर्द गिर्द होती है। इस वृक्ष के पास मानव जाति को अनंत जीवन देने की शक्ति है। लेकिन परमेश्वर ने आदम को वाटिका से निर्वासित कर दिया और इस वृक्ष तक उसकी पहुँच पर रोक लगा दी। यह विरोधाभास स्पष्ट करता है कि वाटिका तक खुली पहुँच, और वहाँ पाई जाने वाली सभी आशीषें जो कभी मनुष्य के पास हुआ करती थीं, तब तक उन्हें प्राप्त नहीं हो सकती जब तक स्वयं परमेश्वर रोक को हटाने का आदेश नहीं देता।

हमारी कहानी की शुरुआत और समाप्ति के बीच तीसरा विरोधाभास मनुष्य को सौंपे गए कार्य के विषय में है। 2:15 का पहला चरण बताता है कि परमेश्वर ने आदम को बिना किसी कष्ट और परेशानी के वाटिका में आशीषित कार्य करने के लिए नियुक्त किया था। परन्तु, 3:23 में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका से निर्वासित कर दिया और वाटिका के बाहर उन्हें कड़ी मेहनत करने की आज्ञा दी। यह विरोधाभास भी कहानी के प्रति एक आवश्यक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। न सिर्फ मनुष्य ने अदन में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मिलने वाले अद्‌भुत जीवन को खो दिया था, लेकिन जब तक हम वाटिका से दूर रहते हैं तब तक हम पर दंड की आज्ञा है की हम कठिनाई और कष्ट भोंगेंगे।

उत्पत्ति 2-3 के आरम्भ एवं अंत भाग के बीच नज़र आने वाले ये तीनों विरोधाभास इस कहानी के कुछ सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। मूसा ने मनुष्य की परिस्थिति में आये उस प्रमुख बदलाव के बारे में लिखा जो अति-प्राचीन समयों में घटित हुआ था। परमेश्वर ने मूल रूप से यह नियोजित किया था कि मनुष्यों को उसकी वाटिका में रहना चाहिए, लेकिन आदम और हव्वा अपने पाप के कारण कठिनाई और परेशानी में फँस गए, और उस वृक्ष से दूर हो गए जो अनंत जीवन देता था ।

अब, जैसा कि हम देखेंगे, विरोधाभास के ये समूह उन परिस्थिति की तरफ प्रत्यक्ष तौर पर इशारा करते हैं जिसमें इस्राएलियों ने स्वयं तब पाया जब मूसा उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था। इस्राएली लोग जब मिस्र में गुलामी और क्रूरता से पीड़ित थे तो वे अदन से भी बहुत दूर थे। उन्हें अदन में परमेश्वर द्वारा दी गई आशीषों को वापस पाने की आवश्यकता थी।

मध्य भाग

कहानी के बाहरी भागों में प्रस्तुत विषम समरूपता को ध्यान में रखकर, हमें अपने अध्ययन को कहानी के मध्य भागों, 2:18-25 और 3:1-21 की ओर केन्द्रित करना चाहिए।

ये दो आंतरिक चरण आरम्भ और अंत के बीच के खाली स्थान को भरते हैं और वे कम से कम तीन तरीक़ों से विषम समरूपता के अपने समूह बनाते हैं।

पहला विरोधाभास परमेश्वर के साथ मनुष्यों के संबंध पर आधारित है। दूसरे चरण में हम आदम और परमेश्वर के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध देखते हैं। 2:18 में परमेश्वर आदम के लिए चिन्ता करता है और हव्वा के रूप में आदम के लिए एक खूबसूरत साथी की रचना करता है। यहाँ जो तस्वीर उभरती है उसमें परमेश्वर और मानव-जाति के मध्य घनिष्ठ प्रेम-संबंध और शांति दिखाई देती हैं। फिर भी, कहानी के तीसरे भाग में, परमेश्वर और मानव-जाति के बीच आरंभिक मेल एवं एकता,असामंजस्य के रूप में परिवर्तित हो जाती है। आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, और 3:8 में वे परमेश्वर की उपस्थिति से छुपने का प्रयास करते है तथा तब परमेश्वर का क्रोध आदम और हव्वा पर भड़कता है।

दूसरा विरोधाभास मानवीय संबंधों में है। 2:18-25 के दूसरे चरण में, आदम और हव्वा परम आनंद में थे। 2:23 में आदम बाइबल की पहली प्रेम कविता की रचना करते हुए कहता है, कि हव्वा "मेरी हड्डियों में की हड्डी, और मेरे माँस में का माँस है," और वे दोनों नंगे और बिना किसी शर्म के एक साथ रहते थे। हालांकि, 3:16 में परमेश्वर इसके विपरीत यह घोषणा करते हुए इस संबंध को शापित करता है, कि पुरुष और स्त्री के बीच संघर्ष चलता रहेगा। स्त्री की लालसा उसके पति की ओर होगी और पति उस पर प्रभुता करेगा। इन वचनों ने उजागर किया कि आदम और हव्वा के पाप ने न केवल परमेश्वर के साथ उनके संबंध को खराब किया, बल्कि उनके आपसी संबंध को भी बिगाड़ दिया। और उस दिन से आज तक, मानवीय संबंधों को कठिनाई और संघर्ष बना हुआ है।

तीसरा विरोधाभास बुराई के साथ मनुष्य के संबंध में प्रकट होता है। दूसरे चरण में, कहानी से बुराई गायब है। आदम और हव्वा पूरी तरह से निर्दोष और बुराई की शक्ति से अलग थे। लेकिन तीसरे चरण तक आते-आते, मनुष्य जाति सर्प के झूठ का शिकार होकर पाप में गिर चुकी थी और बुराई के साथ एक लम्बे संघर्ष में उलझ गई थी। 3:15 में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, कि, एक दिन हव्वा का बीज सर्प पर विजय प्राप्त करेगा, लेकिन आदम और हव्वा को कोई तत्काल जीत नहीं दी गई थी।

कहानी के दूसरे और तीसरे भागों के बीच ये विरोधाभास हमें मूसा की उन कई चिन्ताओं को देखने में मदद करते हैं जब वह इस कहानी को लिख रहा था। मूसा ने आदम और हव्वा के बारे में इस ढंग से लिखा जो इस्राएल के अनुभव से भी मेल खाते थे। पाप ने इस्राएल के जीवन में विनाश को बरकरार रखा था। इसने परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ लोगों के संबंध को नुकसान पहुँचाया था, और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इससे भी अधिक, हर दिन जो कठिनाइयों का सामना उन्हें करना पड़ता, वे मूसा और इस्राएल को याद दिलाती थी कि, आदम और हव्वा के समान, उन्हें भी उस समय का इंतजार करना होगा जब परमेश्वर अंत में अपने लोगों को बुराई पर जीत देगा।

इस विषय-वस्तु की साहित्यिक संरचना को ध्यान में रख कर,अब हम इस अध्याय के वास्तविक अर्थ का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं। परमेश्वर की वाटिका से मनुष्यों के निष्कासन की कहानी को मूसा ने क्यों लिखा? जब वह इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था तो वह उन्हें क्या संदेश दे रहा था?

वास्तविक अर्थ

अब, यह निश्चित है कि, मूसा ने उन इस्राएली को जिनकी वह अगवाई कर रहा था बुनियादी स्तर पर कुछ सामान्य धर्मविज्ञान के विषयों की शिक्षा देने हेतु इस कहानी को लिखा। उसने संसार में पाप की शुरुआत, उसकी प्रकृति और परिणामों के बारे में उन्हें बहुत कुछ बताया। और ये बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हैं। फिर भी, जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, मूसा ने अपने अति-प्राचीन इतिहास को सिर्फ इस्राएल को इतिहास एवं सामान्य धर्मविज्ञान के विषयों के बारे में सूचित के लिए नहीं लिखा था। इसके विपरीत, कई अन्य प्राचीन लेखकों के समान, मूसा ने भी अपने लोगों को मौजूदा धार्मिक एवं सामाजिक हालात के बारे में व्यवहारिक निर्देश देने के लिए अपने अति-प्राचीन इतिहास को लिखा, मुख्यतः, मिस्र छोड़ने और कनान देश जाने के मामले में।

यह समझने के लिए कि मूसा ने अति-प्राचीन अदन की वाटिका और कनान पर इस्राएल की जीत को किस तरह से आपस में जोड़ा था, हमें उसकी कहानी के तीन पहलुओं को देखना होगा: सबसे पहले, मूसा द्वारा अदन की वाटिका का चित्रण; दूसरा, आदम और हव्वा से विश्वसनीयता की अपेक्षा पर उसका ध्यान-केंद्रण; और तीसरा, आदम और हव्वा पर आए श्रापों का चित्रलेखन। आइये, सबसे पहले अदन की वाटिका के विषय मूसा द्वारा दिए गए वर्णन को देखते हैं।

वाटिका

वाटिका के विषय में मूसा का दिया विवरण इतना जटिल है कि संभव है की हमारे कई आधुनिक प्रश्नों का उत्तर शायद हमें कभी प्राप्त न हो सके। फिर भी, मूसा द्वारा किये गए चित्रण की मुख्य बातों को समझना हमारे लिए संभव है। जैसा कि हम देखेंगे, कि मूसा ने अदन की वाटिका का विवरण इस ढंग से दिया जिसमें वह अदन को प्रतिज्ञा किए हुए देश के समान प्रस्तुत कर सके । मूसा के दृष्टिकोण के अनुसार वह जिस देश की तरफ इस्राएल को ले जा रहा था, वह वास्तव में अदन नामक अति-प्राचीन देश का ही स्थान था।

उत्पत्ति 2-3 के कई पहलू स्पष्ट करते हैं कि मूसा चाहता था कि इस्राएल कनान को अदन के देश के साथ जोड़े, लेकिन विशेष रीति से उसकी कहानी की दो विशेषताएं महत्वपूर्ण हैं: पहला, अदन की पहचान; और दूसरा, अदन की पवित्रता। आइए पहले अदन की पहचान को देखते हैं।

पहचान

उत्पत्ति 2:10-14 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धाराओं में बँट गई। पहली धारा का नाम पीशोन है; यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहाँ सोना मिलता है,... दूसरी नदी का नाम गीहोन है; यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है; यह वही है जो अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है। (उत्पत्ति 2:10-14)।

मूसा ने लिखा कि एक ही महानदी अदन से बहती थी और चार धाराओं में विभाजित होती थीं। ये धाराएं पीशोन, गीहोन, हिद्देकेल और फरात थीं। अदन की एक प्रमुख नदी इन चार छोटी नदियों को पानी देती थीं। यह उनकी मुख्य स्रोत थी।

अब, जब हम यहाँ मूसा द्वारा दिए गए विवरण की जाँच करते हैं, तो हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि संसार की शुरुआत से ही हमारे ग्रह के इतिहास में कई भौगोलिक परिवर्तन हुए हैं। यहाँ तक कि मूसा के समय में भी कोई एक महानदी नहीं थी जो इन चारों धाराओं को पानी देती थी। पवित्र शास्त्र सिखाता है कि पानी का यह केंद्रिए स्रोत केवल अंत के समय में प्रकट होगा। फिर भी, मूसा के द्वारा उन चार नदियों का जिक्र करना जिन्हें इस केंद्रिए स्रोत से पानी मिलता था, हमें उस स्थान की एक अनुमानित तस्वीर देता है जहाँ उसके मतानुसार अदन स्थित था।

हम आधुनिक समय की हिद्देकेल और फरात नदियों के क्षेत्र के साथ 2:14 में वर्णित हिद्देकेल और फरात की पहचान कर सकते हैं। इस तथ्य ने कि उत्पत्ति की पुस्तक वास्तव में इन दोनों नदियों का वर्णन करती है, कई आधुनिक टिकाकारों को यह संकेत दिया है कि उत्पत्ति की पुस्तक बेबीलोन की पौराणिक कथाओं से सहमत होती है, कि अदन मेसोपोटामिया के क्षेत्र में ही स्थित था। बेबीलोन की भाषा में, *अदन* का अर्थ है “एक समतल भूमि” या “एक खुली सपाट भूमि,” जो कि हिद्देकेल-फरात के क्षेत्र के लिए उपयुक्त शब्द है। हालांकि, इब्रानी भाषा में, *अदन* का अर्थ “एक समतल सपाट” नहीं है परन्तु इसका अर्थ है “एक सुहावनी या मनमोहक जगह।” इसलिए, मूसा ने बेबीलोनियाई शब्द का प्रयोग बिल्कुल न करते हुए एक इब्रानी शब्द का प्रयोग किया जो अदन के लिए बेबीलोनियाई शब्द के जैसा ही सुनाई देता था, लेकिन इस स्थान को लेकर मूसा की अवधारणा बेबीलोनियाई अवधारणा से भिन्न थी। वास्तव में, उत्पत्ति की कहानी स्पष्ट रूप से बताती है कि अदन मेसोपोटामिया तक ही सीमित नहीं था। जैसा कि हमने उत्पत्ति 2:10 में देखा, कि हिद्देकेल और फरात एक बहुत बड़ी नदी से निकलते थे जो कि अदन में स्थित थी। हम पद 10 में पढ़ते हैं:

> उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धाराओं में बँट गई। (उत्पत्ति 2:10)

इन पदों में हम सिखते है कि अदन में स्थित नदी हिद्देकेल और फरात दोनों को पानी देती थी, न कि अदन हिद्देकेल और फरात के क्षेत्र तक सीमित था। मूसा ने हिद्देकेल और फरात का उल्लेख इसलिए किया ताकि पूर्वी अदन के क्षेत्रो के बारे सामान्य जानकारी या ज्ञान प्रदान कर सके। पूर्व में ये महान नदियां अदन की पूर्वी सीमा को चिह्नित करते थे।

उत्पत्ति 2 में अन्य नदियों एवं उनके स्थित स्थानों का वर्णन इस मत या दृष्टिकोण की पुष्टि करती है। 2:11, 13 में मूसा ने नदियों की एक और जोड़ी का उल्लेख किया। उसने लिखा कि अदन की नदी पीशोन को पानी देती थी, जो हवीला के भीतर से बहती थी, और वह गीहोन को भी पानी देती थी जो कूश के सारे देश को घेरे हुए था। पुराने नियम में, हवीला और कूश की भूमि को अकसर मिस्र के क्षेत्र से जोड़ा गया है। हम पक्के तौर पर यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि महान नील नदी और इन नदियों के सम्बन्ध के

विषय में मूसा की क्या समझ थी, लेकिन यह कहना ठीक है कि उसने मिस्र के उत्तरी क्षेत्र को अदन की पश्चिमी सीमा के रूप में इंगित किया था।

इस तरह हम देख सकते हैं, कि मूसा के दृष्टिकोण से, अदन कोई छोटी जगह नहीं थी। यह हिद्देकेल-फरात से लेकर मिस्र की सीमा तक का फैला हुआ एक बड़ा क्षेत्र था — लगभग वह पूरा क्षेत्र जिसे अब हम उपजाऊ क्रेसेंट या सभ्यता की शैशवस्थली भी कहते हैं। और इसी सुहावने स्थान में एक विशेष वाटिका थी, अदन की वाटिका, जो अदन के बड़े क्षेत्र का केंद्रबिंदु थी।

शुरुआत में, मूसा द्वारा उपजाऊ क्रेसेंट के साथ अदन की पहचान बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगेगी। लेकिन हकीकत में, जिन दिनों मूसा उत्पत्ति की पुस्तक को लिख रहा था उस समय इस्राएल के लिए अदन के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है। उत्पत्ति की पुस्तक में कई अन्य स्थानों पर, इस्राएल को अदन की भूमि के विषय शिक्षा देने के उद्देश्य से मूसा ने उत्पत्ति 2 की ओर इशारा किया था कि अदन का देश, एक उपजाऊ भूमि है और वह देश है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी, वह देश जहाँ वह उन्हें ले जा रहा था। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से तब स्पष्ट होता है जब परमेश्वर ने उत्पत्ति 15:18 में अब्राहम से बात की थी। इस पद में प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमाओं का परमेश्वर ने जिस तरह से वर्णन किया उसे सुनिए:

> इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, "मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है...मैं ने तेरे वंश को दिया है। (उत्पत्ति 15:18)

यहाँ पर हम एक तरफ देखते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की, कि उसका देश हिद्देकेल-फरात के क्षेत्र तक फैलेगा, और वह "मिस्र की नदी" तक पहुँच जाएगा। कई टीकाकारों ने सुझाव दिया है कि यह "मिस्र की महानद" नील नदी के लिए इशारा नहीं हो सकता, बल्कि यह इशारा मिस्र क्षेत्र के सीनै वाली सीमा में छोटी नदी के लिए है। सभी संभावनाओं में, यह स्पष्ट है कि यह पद अदन की भौगोलिक सीमाओं को दिखाता है जैसा कि वे उत्पत्ति 2 में प्रकट होते हैं। उत्पत्ति 2 के लिए यह इशारा स्पष्ट करता है कि मूसा विश्वास करता था कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों से उस देश की प्रतिज्ञा की थी जो एक समय में अदन का देश कहलाता था। मूसा की दृष्टिकोण से, जब इस्राएल कनान देश की ओर जा रहा था, तो वे वास्तव में अदन देश के अति-प्राचीन क्षेत्रो की ओर बढ़ रहे थे।

अदन की ओर इस्राएल के जाने के महत्व को उजागर करने के लिए, मूसा ने उस स्थान की पवित्रता पर जोर दिया। उसने इस्राएल को सिखाने के लिए अदन की पवित्रता की ओर इशारा किया, कि, प्रतिज्ञा किया हुआ देश जहाँ वह उन्हें ले जा रहा था, एक ऐसा स्थान था, जहाँ वे परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में प्रवेश पाने की आशीष को प्राप्त कर सकते थे।

पवित्रता

वह प्राथमिक तरीका जिसमें मूसा ने अदन की पवित्रता को व्यक्त किया था, वह उस शब्दावली में था जिसका उपयोग वह मिलाप वाले तंबू का वर्णन करने के लिए भी करता है। यद्यपि परमेश्वर सर्वव्यापी है, और एक सामान्य समझ के अनुसार हर जगह मौजूद है, मूसा ने एक मिलाप वाला तंबू बनाया जहाँ परमेश्वर अपने लोगों से मिलने के लिए विशेष तरीके से आता है, और इस मिलाप वाले तंबू में परमेश्वर अपनी उपस्थिति को प्रदर्शित करेगा, अपनी व्यवस्था देगा, अपने लोगों की आराधना को स्वीकार करेगा और अपने अनुग्रह से उन्हें आशीषित करेगा। इसलिए, जब मूसा ने अदन की वाटिका को उस शब्दावली में चित्रित किया जिसका उपयोग उसने मिलाप वाले तंबू का वर्णन करने के लिए भी किया, तो उसने यह खुलासा किया कि अदन, अर्थात कनान, पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का स्थान था। वहाँ पर, इस्राएल परमेश्वर की महान आशीषों को प्राप्त कर सकता था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अदन के कम से कम सात पहलू ऐसे है जो यह संकेत देते हैं कि वह मिलाप वाले तंबू के समान, परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का पवित्र स्थान था। सबसे पहले, 3:8 में जब मूसा ने एक विशेष अभिव्यक्ति का उपयोग किया तो वह कहता है कि परमेश्वर "वाटिका में फिरता था।" इब्रानी भाषा में "फिरना" के लिए जो शब्द इस्तेमाल किया गया है वह मित हालक (מִתְהַלֵּךְ) है। यह शब्दावली महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वही विशेष तरीकों में एक है जिसमें मूसा ने लैव्यवस्था 26:12 और अन्य वचनों में मिलाप वाले तंबू में परमेश्वर की उपस्थिति का वर्णन किया था।

दूसरा, 2:9 में हमने जीवन के वृक्ष के बारे में पढ़ा जो अदन की वाटिका की प्रमुख विशेषता के रूप में वर्णित है। इस पवित्र वृक्ष के पास उन लोगों को अनंत जीवन देने की शक्ति थी जो इसके फलों को खाते थे। और यद्यपि बाइबल इस बात को स्पष्ट रूप से नहीं कहती, लेकिन हाल के पुरातात्विक शोध ने ध्यान दिया है कि प्राचीन संसार में कई जगहों पर जीवन के वृक्ष के चित्रों को पवित्र स्थानों में शैलीबद्ध किया गया है। यह सबूत दृढ़ता से संकेत देता है कि मूसा के मिलाप वाले तंबू का सात शाखों वाला दीपक, दीवट, शायद बहुत कुछ जीवन के वृक्ष का शैलीबद्ध प्रतिनिधित्व था। इस तरह, अदन की वाटिका को पृथ्वी पर वास्तविक पवित्र स्थान के रूप में दिखाया गया है।

क्षेत्र में पाए जाने वाले सोने और सुलेमानी पत्थर पर ध्यान केन्द्रित करना मूसा का तीसरा तरीका था जिसमें उसने अदन की पवित्रता पर ध्यान दिया । 2:12 में पढ़ते हैं कि अदन के क्षेत्र में सोना और सुलेमानी पत्थर बड़ी मात्रा में उपलब्ध थे। जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं, निर्गमन 25-40 मिलाप वाले तंबू के निर्माण के महत्वपूर्ण अवयवों के रूप में सोने और सुलेमानी पत्थर का उल्लेख करता है।

अदन की वाटिका और मिलाप वाले तंबू के बीच चौथा संबंध करुबों और स्वर्गदूतों की उपस्थिति है। 3:24 के अनुसार, परमेश्वर ने जीवन के वृक्ष की रक्षा और चौकसी करने के लिए अदन की वाटिका में करुबों को नियुक्त किया था। ठीक इसी तरह, निर्गमन 25:18 और 37:9 इत्यादि पदों में हम मिलाप वाले तंबू के सजावट में करुब के रखे जाने को देखते हैं। इन करुबों ने इस्राएल को न सिर्फ स्वर्ग के स्वर्गदूतों के बारे में, बल्कि अदन में पवित्र स्थान की चौकीदारी करते स्वर्गदूतों के बारे में भी याद दिलाया था।

पांचवां, हम 3:24 में पढ़ते हैं कि अदन का प्रवेश द्वार "पूर्व में" अर्थात, पूर्वी दिशा में था। यह तथ्य तब तक महत्वहीन लगता है जब तक हम इस बात पर गौर नहीं करते हैं कि निर्गमन 27:13 और कई अन्य वचनों के अनुसार, मिलाप वाले तंबू का प्रमुख प्रवेश द्वार पूर्वी दिशा में था। प्राचीन मध्य-पूर्व में अधिकांश मंदिरों के साथ ऐसा ही होता था। एक बार फिर, अदन को परमेश्वर के पवित्र निवास स्थान के रूप में दिखाया गया है।

छठवां, अदन में आदम की सेवा के बारे में लिखते हुए मूसा ने उस भाषा का प्रयोग किया है जिसका वह दूसरी जगहों पर मिलाप वाले तंबू में लेवीयों की सेवा के लिए करता है। 2:15 में मूसा ने वाटिका में आदम की जिम्मेदारी का वर्णन निम्न तरीके से किया है:

> तब [परमेश्वर] ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। (उत्पत्ति 2:15)

ये शब्द गिनती 3:7-8 और 8:26 में भी एक साथ प्रकट होते हैं। वहाँ, मूसा ने इसी अभिव्यक्ति का प्रयोग करते हुए मिलाप वाले तंबू में लेविओं की सेवा का वर्णन किया। आदम और हव्वा अदन की वाटिका में याजकों के समान सेवा करते थे।

सातवां, यह महत्वपूर्ण है कि अदन की वाटिका का बनाया जाना सृष्टि के छः दिनों के बाद हआ था। जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, छः दिनों की सृष्टि का कार्य उत्पत्ति 2:1-3 में परमेश्वर द्वारा सब्त को मनाने के साथ समाप्त हुआ था। दिलचस्प बात यह है, कि निर्गमन 24:16 और उससे आगे के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पदों के अनुसार, मूसा ने परमेश्वर के साथ पर्वत पर छः दिन बिताए थे, और परमेश्वर ने उसे सातवें दिन मिलाप वाला तंबू बनाने के निर्देश दिए।

अदन की सात विशेषताएं दिखाती हैं कि मूसा ने मिलाप वाले तंबू के जैसे ही अदन की वाटिका को पवित्र स्थान के रूप में माना था। यह संसार के अन्दर एक ऐसा स्थान था जहाँ परमेश्वर की विशेष उपस्थिति रहती थी । और उस स्थान के निकट होना परमेश्वर की आशीषों के निकट होना था।

जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है, मूसा विश्वास करता था कि कनान का स्थान ही अदन था। परिणामस्वरूप, अदन की पवित्रता पर ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, मूसा कनान देश की पवित्रता पर भी ध्यान आकृषित कर रहा था। कनान के निकट होने का अर्थ था कि उस स्थान के निकट होना जिसे परमेश्वर ने शुरुआत से अपने पवित्र निवास स्थान होने के लिए अभिषेक किया था। व्यवस्थाविवरण 12:10-11 उन सबसे उत्कृष्ट वचनों में से एक है जहाँ मूसा के द्वारा भविष्य में प्रकट होने वाले पवित्र स्थान की शिक्षा मिलती है। वहाँ उसने इन वचनों को लिखा:

> परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे, और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटें; (व्यवस्थाविवरण 12:10-11)

यह वचन कनान देश के लिए मूसा के दर्शन की एक प्रमुख विशेषता को उजागर करता है। उसने ज़ोर देकर कहा कि एक दिन कनान परमेश्वर की उपस्थिति के लिए स्थायी निवास स्थान होगा — वह परमेश्वर यहोवा का ल मंदिर ठहरेगा। यह निश्चित है, कि मूसा के दिनों का कनान देश, आरम्भ के अदन के मूल स्वरुप की एक झलक मात्र ही था। यहाँ तक कि जब सुलेमान ने यरूशलेम के मंदिर का निर्माण किया, तब भी प्रतिज्ञा किया हुआ देश पूरी रीति से पाप से छुड़ाया नहीं गया था न ही उसको उसकी मूल सिद्धता में फिर से बहाल किया गया था। फिर भी, जब मूसा ने अदन की पवित्रता के बारे में लिखा, तो उसने इस्राएलियों के सामने यह दर्शन रखा कि एक दिन उनका देश कैसा बन सकता है। प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुँचना अदन के निकट पहुँचना था, यानी पृथ्वी पर परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति का स्थान। जिस तरह परमेश्वर ने शुरुआत में आदम और हव्वा को अद्‌भुत वाटिका रूपी मंदिर में रखा था, वैसे ही परमेश्वर अब इस्राएल को कनान देश में ले जा रहा था, और एक बार जब वे उस देश में रहने लगते हैं, तो देश के लोग परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में रहने के आनंद और आशीषों का अनुभव करना शुरु कर देंगे।

अब जब कि हम देख चुके हैं कि मूसा ने कैसे अदन में आदम और हव्वा की आशीषों को उस अनुग्रह के पूर्वाभास के रूप में प्रस्तुत किया जो प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएल के लिए इंतजार कर रहा था, तो अब हम उत्पत्ति 2-3 में दूसरे विषय को देखने के लिए तैयार हैं: परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा की विश्वसनीयता की परीक्षा। यह विषय मूसा की प्रस्तुति में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

विश्वासयोग्यता

अदन के बारे में मूसा की कहानी के लिए विश्वासयोग्यता का विषय महत्वपूर्ण था। यद्यपि अदन आश्चर्यजनक आशीष का स्थान था, वह ऐसा स्थान भी था जो नैतिक जिम्मेदारी की माँग करता था। मूसा ने इस तथ्य पर इसलिए जोर दिया क्योंकि वह चाहता था कि इस्राएली लोग याद रखें कि प्रतिज्ञा का देश जहाँ वे जा रहे थे वह परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति इस्राएल के वफादार होने की भी माँग करता था।

यह समझने के लिए कि मूसा ने इस विषय पर क्यों जोर दिया, हमें दो बातों की खोज करने की आवश्यकता है: अदन की वाटिका विश्वासयोग्यता की अपेक्षा, और कनान में विश्वासयोग्यता की अपेक्षा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आइए पहले उस विश्वास और सच्चाई को देखें जिसकी अपेक्षा अदन की वाटिका में परमेश्वर आदम और हव्वा से करता था।

अदन में

वाटिका में विश्वसनीयता का विषय उत्पत्ति 2 की शुरुवात में ही प्रकट होता है और यह 2 और 3 के पूरे अध्यायों में बार-बार प्रकट होता है। और कई मायनों में, यह इन अध्यायों का प्रमुख विषय है। उत्पत्ति 2:16-17 में परमेश्वर ने जिस तरीके से विश्वासयोग्य बने रहने के लिए आदम को चुनौती दी उसे सुनिए:

> तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 16:17)

अब, यह बात पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि क्यों परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को इस विशेष वृक्ष से खाने से मना किया था; आखिरकार, पवित्र-शास्त्र के अन्य भागों में भले और बुरे को जानना उपलब्धि माना गया है। फिर भी, इस अनिश्चितता के बावजूद, यह साफ है कि परमेश्वर ने यह देखने के लिए आदम और हव्वा को जाँचना चाहा कि वे उसके प्रति वफादार होंगे या नहीं। यदि आदम और हव्वा आज्ञाकारी रहते हैं, तो वे परमेश्वर से इनसे भी बड़ी आशीषों को प्राप्त करेंगे। लेकिन यदि वे अनाज्ञाकारी साबित होते हैं, तो वे परमेश्वर के दंड को भोगेंगे। अदन एक पवित्र स्थान था, और वहां रहने वाले लोगों को भी पवित्र होना था।

कनान में

अदन की वाटिका में विश्वासयोग्यता की परीक्षा पर ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, मूसा ने इस्राएलियों से जिन्हें वह प्रतिज्ञा किए हुए देश के ओर ले जा रहा था, ठीक वैसी ही वफादारी दर्शाने के लिए जोर दिया था। जब मूसा इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था, तो उसने उन्हें बार-बार चेतावनी दी कि परमेश्वर अपने प्रति उनसे विश्वासयोग्यता की माँग करता है। मूसा ने व्यवस्थाविवरण के आठवें अध्याय में संक्षेप में इस बात पर अपनी शिक्षा को सारांशित किया है। व्यवस्थाविवरण 8:1 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूँ उन सभों पर चलने की चौकसी करना, इसलिये कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। (व्यवस्थाविवरण 8:1)

इस पद से यह बात स्पष्ट है कि परमेश्वर इस्राएल से अपने प्रति वफादारी की माँग करता था ताकि वे कनान देश में प्रवेश और उसमें वास कर सकें। वास्तव में, जंगल में देश के पूरे भ्रमण के दौरान, उन्हें यह सिखाने के लिए कि पवित्र कैसे बनना है परमेश्वर ने इस्राएलियों की परीक्षा की थी। व्यवस्थाविवरण 8:2 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं। (व्यवस्थाविवरण 8:2)

इसके अलावा, मूसा ने यह भी स्पष्ट किया कि एक बार जब इस्राएल राष्ट्र पवित्र देश में प्रवेश करता है, तो उन्हें परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहना है, नहीं तो वे इस आशीष को खो देंगे। व्यवस्थाविवरण 8:10-20 में जिस तरीके से उसने इसे कहा उसे सुनिए:

> और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसे धन्य मानेगा। इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे;... यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लेगा, और उनकी उपासना और उनको दण्डवत् करेगा, तो मैं आज तुम को चिता देता हूँ कि तुम निःसन्देह नष्ट हो जाओगे। जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे सम्मुख से नष्ट करने पर है, उन्हीं के समान तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा का वचन न मानने के कारण नष्ट हो जाओगे। (व्यवस्थाविवरण 8:10-20)

मूसा जानता था कि इस्राएली लोगों को, आदम और हव्वा की ही तरह, परमेश्वर की आज्ञाओं के खिलाफ विद्रोह करने की आदत थी। और इन प्रवृत्तियों के कारण, मूसा ने चेतावनी देने के लिए वाटिका में आदम और हव्वा की परीक्षा पर ध्यान-केंद्रित किया कि परमेश्वर कनान में रहने की इच्छा रखने वाले हर एक व्यक्ति से वफादारी की माँग करता है। बेशक, परमेश्वर इस्राएल से सिद्धता की माँग नहीं करता, और यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही संभव है कि कोई व्यक्ति विश्वासयोग्य बने। फिर भी, अगर इस्राएल परमेश्वर की व्यवस्था का संगीन रूप से उल्लंघन करे और उससे दूर हो जाए, जैसा कि आदम और हव्वा ने वाटिका में किया था, तो वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की आशीषों का आनंद नहीं ले पाएंगे। जब मूसा ने इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, तो वह चिंतित था कि जीवन की इस विशेष बात को वे उस देश में याद रखें। व्यवस्थाविवरण 8 की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए, आदम और हव्वा से विश्वासयोग्यता की माँग पर मूसा के ध्यान-केंद्रण के प्रमुख कारण को हम देख सकते हैं। उसने इस मुद्दे पर इस्राएलियों को प्रेरित करने के लिए जोर दिया कि परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार बने रहने के द्वारा वे उस गलत कदम को दोहराने से बच जाएंगे जो आदम और हव्वा ने किया था। आदम और हव्वा को वाटिका में परखा गया था और उन्हें बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि उन्होंने पाप किया था। मूसा के दिनों में, इस्राएल अभी भी अदन की वाटिका के बाहर था, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें परखा ताकि अदन में फिर से प्रवेश और परमेश्वर की आशीषों में वहाँ वास करने के लिए इस्राएल देश को तैयार करे।

इसलिए हम देखते हैं कि मूसा ने अदन की वाटिका में विश्वास की परख के बारे में लिखा था, उसने न केवल इस्राएल को समझाया कि आदम और हव्वा के अति-प्राचीन दिनों में क्या हुआ था। बल्कि उसने यह भी समझाया कि उसके अपने दिनों में क्या हो रहा था। परमेश्वर इस्राएल को अदन की वाटिका में जीवन की अद्‌भुत आशीष को देना चाह रहा था। फिर भी, आदम और हव्वा के समान, वे इन आशीषों का आनंद नहीं ले सकते थे जब तक कि वे परमेश्वर के प्रति वफादार न हों। मूसा इस्राएल को एक पवित्र लोगों के रूप विश्वास के द्वारा जीने के लिए बुला रहा था, जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति पूरी रीति से समर्पित हों। केवल तभी वे देश में प्रवेश और वहाँ शांति से रहने की आशा कर सकते थे।

अभी तक हमने देखा है कि किस तरह मूसा ने अदन के देश और कनान देश को पृथ्वी पर परमेश्वर की आशीष वाले स्थान के रूप में चित्रित किया था, और हमने यह भी देखा कि उसने इस विचार को कैसे व्यक्त किया कि दोनों देश उनमें रहने वाले लोगों से वफादारी के साथ सेवा की माँग करते थे। अब हम इस्राएल के लिए उत्पत्ति 2 और 3 के वास्तविक अर्थ के तीसरे आयाम पर ध्यान-केंद्रित करने जा रहे हैं: आदम और हव्वा की विश्वासघात के परिणाम।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिणाम

वाटिका में हुई अनाज्ञाकारिता और विश्वासघात के परिणामों को देखने के लिए, हम आदम और हव्वा के पाप के तीन प्रभाव को देखेंगे: मृत्यु, दर्द और निष्कासन।

मृत्यु

पहले स्थान पर, मूसा ने समझाया कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पाप के परिणामस्वरूप मृत्यु की चेतावनी दी थी। यह विषय पहली बार उत्पत्ति 2:17 में आदम को परमेश्वर द्वारा दी गयी चेतावनी में प्रकट होती है। वहाँ, परमेश्वर ने कहा:

> "पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 2:17)

इन वचनों में कि "तू अवश्य मर जाएगा" एक वाक्यशैली नज़र आती है जो आने वाली मृत्यु की निश्चितता को दर्शाती है। इस वाक्य का व्याकरणिक निर्माण उस वाक्य से बिल्कुल मेल खाता है जिसे मूसा ने अपनी व्यवस्था में, मृत्यु की सज़ा की चेतावनी देते हुए लिखा था। जब मूसा की व्यवस्था गंभीर अपराध के दोषियों के खिलाफ मृत्यु की सज़ा की चेतावनी देती थी, तो मूसा घोषित करता था, "वह निश्चित रूप से मर जाएगा" या "वे निश्चित रूप से मर जाएंगे।" इन अध्यायों का कानूनी संदर्भ सुझाव देता है कि ये अभिव्यक्तियाँ मृत्युदंड घोषित करने का तरीका थीं। परमेश्वर यह नहीं कह रहा था कि आदम और हव्वा तुरंत मर जाएंगे, परन्तु यह कि पाप के कारण मृत्यु निश्चित रूप से आएगी।

इस प्रकाश में उत्पत्ति 2:17 में आदम के लिए परमेश्वर की चेतावनी को हम ऐसा बताते हुए समझ सकते हैं कि आदम मृत्यु के आधीन हो जायेगा। उसे मृत्यु के लिए दोषी ठहराया जाएगा। निश्चित रूप से मूसा ने यह समझाने के लिए कि संसार में मृत्यु कैसे आई आदम के पाप के इस परिणाम के बारे लिखा था, लेकिन उसका उद्देश्य इस्राएलियों के अनुभव से जिन के लिए उसने इसे लिखा ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में संबंधित था। वे मृत्यु से अच्छी तरह परिचित थे। मूसा के पाठकों ने मिस्र को छोड़कर आये पहली पीढ़ी के ज्यादातर लोगों को जंगल में मरते हुए देखा था, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था। जैसा कि मूसा ने गिनती 26:65 में लिखा:

> यहोवा ने उन इस्राएलियों के विषय कहा था कि वे निश्चय जंगल में मर जाएँगे, और इसलिये यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उनमें से एक भी पुरुष नहीं बचा। (गिनती 26:65)

एक बार फिर, हम भाषा को देखते हैं "वे निश्चय मर जाएँगे" जो मूसा की व्यवस्था, और वाटिका में आदम और हव्वा की कहानी को दिखाता है।

इस संबंध में इस्राएली लोग, आदम और हव्वा की कहानी को सुनकर, जंगल में मृत्यु के अपने अनुभव को आदम और हव्वा द्वारा परमेश्वर की आज्ञा के उल्लंघन के साथ जोड़ सकते थे। वाटिका में परमेश्वर की आज्ञा के प्रति विश्वासघात का परिणाम मानवता के पहले माता-पिता पर मृत्यु की सज़ा थी। और यही सज़ा इस्राएलियों पर भी थी जो मूसा के दिनों में परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति गंभीर रूप से अविश्वासी साबित हुए थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पीड़ा

जब हम उत्पत्ति की कहानी पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट है कि आदम और हव्वा के लिए मृत्यु तुरंत नहीं आई थी। पहले परमेश्वर ने आदम और हव्वा को दर्द और पीड़ा बद्ध जीवन का अनुभव करने दिया। एक ओर, उत्पत्ति 3:16 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> फिर स्त्री से उसने कहा, "मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी" (उत्पत्ति 3:16)

दूसरी ओर, परमेश्वर ने आदम को भी दर्द-भरे जीवन की सज़ा दी। उत्पत्ति 3:17 में आदम के लिए हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; (उत्पत्ति 3:17)

वाटिका में पाप के परिणामों के बारे में मूसा जो कुछ भी कह सकता था, उन सभी में उसके द्वारा मानव पीड़ा पर यह दोहरा ध्यान-केंद्रण करना इस्राएल के लिए इस कहानी को लिखने के उसके उद्देश्य के साथ सटीक बैठता है। कनान देश से बाहर रहते हुए उन्होंने यहाँ वर्णित पीड़ा के प्रकारों का अनुभव किया था। लेकिन मूसा ने जिस तरीके से प्रतिज्ञा किए हुए देश में जीवन का वर्णन किया है उसे सुनिए। व्यवस्थाविवरण 11:10-12 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> देखो, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहाँ से निकलकर आए हो, जहाँ तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पाँव से नालियाँ बनाकर सींचते थे; परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है; वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर लगी रहती है। (व्यवस्थाविवरण 11:10-12)

संक्षेप में, मूसा इस्राएल को ऐसे स्थान में ले जा रहा था जहाँ उन्हें उस कष्ट और पीड़ा से जिसका अनुभव उन्होंने कनान के बाहर रहते हुए किया था, राहत मिलेगी। परिणामस्वरूप, जब मूसा ने आदम और हव्वा पर आए दंड के बारे में लिखा, तो उसने अपने इस्राएली पाठकों को अविश्वास के पाप, जिसके परिणामस्वरूप पीड़ा और मृत्यु आई, से दूर रहने की, और परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहने के लिए आज्ञा दी, जिससे कि वे कनान को लौट सके और परमेश्वर की आशीषों में जीवन की खुशियों का अनुभव लें सके।

निष्कासन

आदम और हव्वा की अनाज्ञाकारिता का तीसरा प्रभाव 3:22 में प्रकट होता है। उत्पत्ति 3:22 के वचनों पर गौर करें:

> फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है : इसलिये अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।" (उत्पत्ति 3:22)

यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि जीवन का वृक्ष मानवता को "हमेशा के लिए जीवित रखने" में सक्षम था। दर्द और मृत्यु की समस्या का यह अंतिम समाधान था। फिर भी परमेश्वर नहीं चाहता था कि इस

समय आदम और हव्वा इसे खाएं। उन्हें वाटिका से और जीवन के वृक्ष से निष्कासित कर दिया गया था। हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मनुष्य के लिए जीवन के वृक्ष तक पहुँच हमेशा के लिए वर्जित नहीं थी। शेष पवित्र-शास्त्र यह स्पष्ट कर देता है कि जो लोग परमेश्वर के प्रति वफादार हैं वे अंततः इस वृक्ष में से खाने के लायक होंगे। प्रकाशितवाक्य 2:7 में जीवन के वृक्ष के बारे में प्रेरित यूहन्ना ने जो कहा उसे सुनिए:

> जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा। (प्रकाशितवाक्य 2:7)

अब यूहन्ना उस अंत समय के विषय में बोलता है जब मसीह वापस पृथ्वी पर लौटेगा। फिर भी, उसके वचनों ने समझाया है कि क्यों मूसा ने इस वृक्ष के बारे में इस्राएल को लिखा। जब आदम और हव्वा ने पाप किया था, परमेश्वर ने जीवन के वृक्ष का मार्ग को बंद कर दिया , लेकिन मूसा के दिनों में, परमेश्वर इस्राएल के लिए उस मार्ग को खोल रहा था ताकि जब वे कनान देश को लौटें तो कम से कम जीवन की आशीष के पूर्व-स्वाद को चख सकें। व्यवस्थाविवरण 30:19-20 में मूसा ने जिस तरीके से इसे लिखा उसे सुनिए:

> मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें; इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानो, और उससे लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ जीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने अब्राहम , इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा।" (व्यवस्थाविवरण 30:19-20)

यदि इस्राएली लोग परमेश्वर के प्रति वफादार रहेंगे तो उन्हें कनान देश में दीर्घ जीवन और खुशी प्राप्त करने का सुअवसर मिलेगा। जिस तरह आदम और हव्वा ने जीवन के वृक्ष तक अपनी पहुँच को खो दिया,उसी तरह मूसा के दिनों में, परमेश्वर इस्राएल को वहाँ पाये जाने वाले जीवन की आशीष के आंशिक स्वाद को चखने का अनुभव प्रदान कर रहा था। जीवन का यह अनुभव उस अनंत जीवन का पूर्ण मानक नहीं था जिसे हम मसीह के दूसरे आगमन के दौरान अनुभव करने पाएंगे। फिर भी, मसीह के आगमन के साथ आने वाले आनंद का ये आंशिक पूर्व-स्वाद रहा होगा। मूसा ने इस्राएलियों के सामने प्रतिज्ञा किए हुए देश में दीर्घ जीवन की आशीष का आनंद प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा था।

इस तरह हमने देखा कि अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के विद्रोह की कहानी संसार में पाप की उत्पत्ति की कहानी से बहुत बढ़कर कर थी। अदन और कनान के बीच संबंधों को स्पष्ट कर, मूसा ने इस्राएली पाठकों को उनके अपने जीवनों के बारे में भी सिखाया। उन्होंने सीखा कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश उनके लिए कितना अद्‌भुत हो सकता है।

अब जब कि हमने उत्पत्ति 2-3 की साहित्यिक संरचना और वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हम तीसरा प्रश्न पूछने के लिए तैयार हैं। इस अध्याय को अपने जीवन में लागू करने में नया नियम हमें कैसे सिखाता है?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वर्तमान प्रासंगिकता

हमारे सामने अब यह स्पष्ट है कि मूसा ने अपने इस्राएली पाठकों को आदम और हव्वा की गलतियों को न दोहराने, और कनान देश में प्रवेश के द्वारा स्वर्ग के मार्ग पर वापस मुड़ने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इन अध्यायों को लिखा था। लेकिन इस्राएल को दिए गए निर्देशों से आज हमारा क्या वास्ता है? साधारण शब्दों में कहें तो, जिस तरह मूसा ने आदम के उठाये गलत कदम को वापस न दोहराने हेतु इस्राएल को प्रोत्साहित करने के लिए वाटिका की पाप की कहानी का प्रयोग किया था ताकि वे फिर से स्वर्गिक उद्धार को पा सके, वैसे ही नए नियम के लेखकों ने सिखाया है कि मसीह में उद्धार भी स्वर्गलोक की ओर एक वापसी है। हम मसीह के राज्य के तीन चरणों पर सामान्य रीति से ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, मसीह के संबंध में उत्पत्ति 2-3 पर नए नियम के उपयोग की खोज करेंगे। इस अध्याय को मसीह के पहले आगमन में उसके राज्य के आरम्भ के साथ इसे कैसे लागू किया गया है इसको देखने के द्वारा शुरु करेंगे, और फिर हम देखेंगे कि आज परमेश्वर के राज्य की निरंतरता में यह हमारे जीवनों के साथ कैसे बातें करता है। और आखिर में, हम देखेंगे कि जब यह वचन मसीह के दूसरे आगमन में उसके राज्य की परिपूर्णता के बारे में सिखाता है, तो नया नियम इस अध्याय से क्या निष्कर्षों को निकालता है। आइए पहले राज्य के आरम्भ पर विचार करते हैं।

आरम्भ

वह एक तरीका है जिसके तहत नया नियम मसीह द्वारा लाये उद्धार के बारे में बताता है, वह है पृथ्वी पर की गई उसकी सेवकाई। राज्य के आरम्भ में मसीह ने पीछे जाकर उस गलती को सुधार दिया जिसे अदन की वाटिका में आदम और हव्वा ने किया था। पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान, मसीह ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया जिसमे आदम और हव्वा असफल रहे थे। पहले यह देखने के द्वारा कि पौलुस की पत्रियों में यह विषय कैसे प्रकट होता है, और दूसरा, मत्ती के सुसमाचार में यह कैसे प्रकट होता है हम नए नियम की शिक्षा के इस पहलू की जाँच करेंगे। आइए पौलुस के दृष्टिकोण के साथ शुरु करते हैं।

पौलुस

पौलुस ने संक्षेप में अपने दृष्टिकोण को रोमियों 5:14 में सारांशित किया है। वहाँ उसने लिखा:

> तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिह्न है, के अपराध के समान पाप न किया।
> (रोमियों 5:14)

ध्यान दें कि आदम उस आने वाले का एक चिह्न था। बाकी रोमियों 5 इसको और स्पष्ट करता है कि “वह आने वाला” मसीह था। रोमियों 5:18-19 जिस तरीके से पौलुस ने इसे सारांशित किया उसे सुनिए:

> इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।
> (रोमियों 5:18-19)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ध्यान दें कि पौलुस ने किस तरह से इसे यहाँ बताया है। आदम का एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा लाने का कारण हुआ, लेकिन मसीह की धार्मिकता सब मनुष्यों के धर्मी ठहराये जाने का कारण हुई। ऐसा क्यों था? क्योंकि एक मनुष्य, आदम, की अनाज्ञाकारिता ने हमें पापी बना दिया था। लेकिन एक मनुष्य, मसीह, की आज्ञाकारिता ने हम धर्मी ठहराए गए। अधिकांश मसीही लोग इस शिक्षा से परिचित हैं। जिस तरह मूसा ने उत्पत्ति 2-3 में सिखाया था, कि आदम सिर्फ एक साधारण आदमी था, लेकिन उसके कार्यों का परिणाम उन सब के ऊपर पड़ा जो उसके साथ पहचाने जाते हैं। आदम का पाप संपूर्ण मानव जाति के लिए मृत्यु को लेकर आया क्योंकि परमेश्वर के साथ बाँधी वाचा में वह हमारा प्रतिनिधि था। आदम के पाप के परिणामस्वरूप, हम सभी परमेश्वर की आशीष और स्वर्गलोक के बाहर और मृत्यु के अभिशाप के आधीन हो गए हैं। लेकिन साथ ही, नया नियम सिखाता है कि जो मसीह पर विश्वास लाते है उनके लिए मसीह वाचा में उनका प्रतिनिधित्व करता है। फिर भी, आदम की अनाज्ञाकारिता के विपरीत, परमेश्वर के प्रति मसीह की आज्ञाकारिता उन सभी के लिए धार्मिकता और जीवन को लाती है जो उसमें गिने जाते हैं। इस शिक्षा से हम अपने जीवनों में आदम के पाप की कहानी को लागू करने के बारे में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात सीखते हैं। खोए हुए स्वर्गलोक को दोबारा पाने का एकमात्र रास्ता मसीह की धार्मिकता और आज्ञाकारिता के माध्यम से है। हम परमेश्वर के सामने अनंत जीवन में अपनी योग्यता के बल पर प्रवेश नहीं कर सकते है। हमसे पहले स्वर्गलोक में प्रवेश करने के लिए हमें एक बिलकुल सिद्ध प्रतिनिधि की आवश्यकता है, और मसीह वह प्रतिनिधि है। परमेश्वर की उपस्थिति में उद्धार और अनंत जीवन को हम केवल इसलिए पाते हैं क्योंकि मसीह परमेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से आज्ञाकारी था। पृथ्वी पर अपनी सेवा में, मसीह ने स्वर्गलोक में प्रवेश के अधिकार को पुनः अर्जित किया और केवल वे जो उस पर अपने विश्वास को लाते हैं उसके साथ प्रवेश कर सकते हैं।

आदम और मसीह के बीच आपसी-संबंध को अन्य नए नियम के लेखकों ने भी व्यक्त किया था। आइए विचार करते हैं कि मत्ती के सुसमाचार में यह विषय कैसे प्रकट होता है।

मत्ती

मत्ती 4:1-11 में मसीह की परीक्षा की कहानी में मत्ती ने विशेष रूप से उस तरीके पर ध्यान आकर्षित किया जिसमें मसीह ने आदम के पाप को या पलटकर उसे सुधार दिया (जिसके समानांतर वचन लूका 4:1-13 में पाया जाता है)। कई अलग-अलग तरीकों से, मसीह की परीक्षा की कहानी, वाटिका में आदम और हव्वा के अनुभव, और मूसा द्वारा इस्राएलियों के लिए लाई गई उन चुनौतियों दोनों के समानांतर है जब उसने आदम और हव्वा के बारे में लिखा था। सबसे पहले, मसीह की परीक्षा का स्थान इस्राएल के साथ उसे जोड़ता है, जब इस्राएली लोग मूसा के पीछे चल रहे थे। मत्ती 4:1 के अनुसार, आत्मा यीशु को जंगल में ले गया था, ठीक उसी तरह जैसे परमेश्वर इस्राएल को जंगल में ले गया था। जंगल में ही परमेश्वर ने इस्राएल की परीक्षा यह देखने के लिए की थी कि वह आज्ञाकारी होगा कि नहीं, और मसीह की भी परीक्षा जंगल में की गई थी।

दूसरा, जंगल में व्यतीत किया गया यीशु का समय अंतराल इस्राएल के अनुभव के जैसा था। जिस तरह इस्राएल जंगल में चालीस वर्ष के लिए था, उसी तरह मत्ती 4:2 के अनुसार, मसीह जंगल में चालीस दिन के लिए था।

तीसरा, मसीह की परीक्षा में भूख एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। मत्ती 4:3 में शैतान ने पत्थर को रोटी में बदलने के लिए मसीह की परीक्षा की थी। मसीह की परीक्षा का यह आयाम जंगल में पानी और खाने के लिए इस्राएल के परखे जाने के समानांतर था।

चौथा, यीशु द्वारा पवित्र-शास्त्र का उपयोग करने के तरीकों में यीशु ने स्वयं अपने अनुभव को जंगल में इस्राएल के परखे जाने के साथ जोड़ा था। मत्ती 4:4 में यीशु ने व्यवस्थाविवरण 8:3 का हवाला दिया। मत्ती 4:7 में उसने व्यवस्थाविवरण 6:16 का हवाला दिया, और मत्ती 4:10 में उसने

व्यवस्थाविवरण 6:13 का हवाला दिया। ये पुराने नियम के अध्याय व्यवस्थाविवरण के उन भागों में से हैं जहाँ मूसा ने जंगल में इस्राएल की परीक्षा का वर्णन किया था। इन पदों का हवाला देने के द्वारा, यीशु ने प्रत्यक्ष रूप में परीक्षा के अपने अनुभव को इस्राएल देश के परखे जाने के साथ जोड़ा था। इस तरह हम देखते हैं कि मत्ती द्वारा वर्णित यीशु की परीक्षा की कहानी उस संदेश के साथ जुड़ती है जिसे मूसा ने मूल रूप से उत्पत्ति 2-3 के माध्यम से इस्राएल को दिया था। अपने सक्रिय आज्ञाकारिता के द्वारा, यीशु वहाँ सफल हुआ जहाँ दोनों आदम और इस्राएल विफल रहे थे। मसीह परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार था। इसलिए यीशु ने उन प्रसिद्ध वचनों को बोला था जो लूका 23:43 में पाये जाते हैं। जिस तरह से कनान देश में प्रवेश करने के लिए इस्राएल को तैयार करने हेतु उन्होंने जंगल में परीक्षा का सामना किया था, उसी तरह लूका 23:43 लिखता है कि क्रूस पर यीशु ने पश्चाताप करने वाले चोर से ये वचन बोले थे:

> मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। (लूका 23:43)

मसीह का इनाम उसकी धार्मिकता के लिए स्वर्गलोक में अनंत जीवन था।

इस तरह हम देखते हैं कि नया नियम आदम और हव्वा की कहानी, और साथ में जंगल में इस्राएल की परीक्षा को भी मसीह की सांसारिक सेवकाई में राज्य के आरम्भ के साथ जोड़ता है। मसीह वह अंतिम आदम था जो वहाँ सफल हुआ जहाँ आदम विफल हुआ था। इसके अलावा, इस्राएल की विफलता को पलटने के द्वारा मसीह जंगल में परीक्षा पर विजय पाता है। और इस कारण से, उसने अनंत स्वर्गलोक में प्रवेश किया।

अब जब कि हमने देख लिया है कि किस तरह से नया नियम, मूसा द्वारा रचित वाटिका में आदम और हव्वा की कहानी को मसीह के पहले आगमन के साथ जोड़ता है, हमें अपने दूसरे पहलू पर आना चाहिए। किस तरह से नया नियम इन सिद्धांतों को राज्य की निरंतरता के लिए लागू करता है, यानी वह समय जिसमें अब हम रहते हैं?

निरंतरता

इस संबंध में नए नियम के कई वचन सामने आते हैं। लेकिन हम केवल दो को ही देखेंगे: पहला, उत्पत्ति के इन अध्यायों पर पौलुस का ध्यान-केंद्रण, और दूसरा, जिस तरह से याकूब ने इन बातों को लिखा।

पौलुस

आइए सबसे पहले 2 कुरिन्थियों 11:3 में पौलुस के वचनों को देखते हैं:

> परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ। (2 कुरिन्थियों 11:3)

जैसे-जैसे पौलुस इस अध्याय में आगे बढ़ता है, तो उसने बताया कि वह बहुत चिंतित था कि कुरिन्थियों की कलीसिया अन्य सुसमाचार को मानने लगेगी। यहाँ हम देखते हैं कि पौलुस हव्वा के नकारात्मक उदाहरण पर ज़ोर देते हुए विश्वासघात के प्रकारों में सबसे ख़राब तरह के विश्वासघात के खिलाफ चेतावनी देता है — यानी मसीह के सच्चे सुसमाचार को त्यागना। जिस तरह मूसा ने हव्वा की परीक्षा की कहानी का उपयोग इस्राएल को ईमानदारी के साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जाने हेतु चेतावनी देने के लिए किया था, उसी तरह से पौलुस ने अपने दिनों में मसीह के सभी अनुयायियों को तथा

उनसे अपेक्षित बुनियादी वफादारी के बारे में चेतावनी देने के लिए इसी कहानी का उपयोग किया था। राज्य की निरंतरता के दौरान, दृश्यमान कलीसिया में कई लोग सुसमाचार की मूलभूत सच्चाइयों को त्यागने के खतरे का सामना करते हैं। इस आक्रामक रीति से विश्वास के त्यागे जाने के खिलाफ कलीसिया को सावधान रहना चाहिए क्योंकि इसके परिणाम उतने ही भयानक हैं जितने की वे आदम और हव्वा के लिए थे।

याकूब

याकूब ने जब मसीही लोगों के जीवन में परीक्षा और परख की भूमिका का वर्णन किया तो वह पौलुस जैसा ही दृष्टिकोण अपनाता है । याकूब 1:12-15 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है... प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। (याकूब 1:12-15)

यह स्पष्ट है कि याकूब ने उत्पत्ति 2-3 की ओर संकेत किया था। 1:14 में उसने पाप में गिरने के पीछे का कारण मनुष्य की शक्तिशाली एवं तीव्र "अभिलाषा" को बताया है, यह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल के लिए हव्वा की अभिलाषा थी जिसके कारण उसने पाप किया। दूसरा, याकूब ने समझाया कि जो परीक्षा में खरा निकलेगा वह "जीवन का मुकुट पाएगा।" इसके विपरीत पाप का परिणाम यह है कि यह "मृत्यु को जन्म देता है।" यहाँ जीवन और मृत्यु के बीच जो विषमता है वह आदम और हव्वा की कहानी में जीवन और मृत्यु के बीच विषमता के जैसी है। जिस तरह मूसा ने आदम और हव्वा की परीक्षा के बारे में ज़ोर देने के द्वारा जंगल में परीक्षा के दौरान इस्राएल में विश्वासयोग्यता को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित किया, उसी तरह से पौलुस और याकूब ने राज्य की निरंतरता में परीक्षाओं के दौरान हमें वफादारी के लिए प्रोत्साहित किया। मसीही जीवन के दौरान परीक्षाएं हमारे सच्चे चरित्र को उजागर करतीं हैं और हमें अनंत जीवन के लिए तैयार करती हैं। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए हम जो भी कर सकते हैं वह हमें करना चाहिए ताकि स्वर्गलोक में हमें अनंत जीवन के उपहार से सम्मानित किया जा सके।

यह देखने के बाद कि नया नियम किस तरह से वाटिका में आदम और हव्वा की कहानी को राज्य के आरम्भ और निरंतरता के लिए लागू करता है, हमें अब अपने ध्यान को अंतिम चरण पर मोड़ना चाहिए, यानी दूसरे आगमन पर मसीह में उद्धार की परिपूर्णता।

परिपूर्णता

यह विषय भी नए नियम में कई स्थानों पर प्रकट होता है, लेकिन हम केवल दो अनुच्छेदों को ही देखेंगे: एक रोमियों में और दूसरा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में।

रोमियों

सबसे पहले , उस शैली पर ध्यान दें जिसमें पौलुस अपनी पत्री को समाप्त करते हुए रोम के विश्वासियों को आशा दे रहा था । रोमियों16:20 में उसने इन वचनों को लिखा:

> शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। (रोमियों 16:20)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इन वचनों में, पौलुस ने रोम के मसीहों को मसीह के दूसरे आगमन में उनकी महान आशा की याद दिलाई। लेकिन उसने उत्पत्ति 3 में उद्धार की प्रतिज्ञा का वापस हवाला देते हुए ऐसा किया। जैसा कि हमने इस पाठ में पहले देखा है, उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर ने सर्प से कहा था कि एक दिन हव्वा का बीज, मानव जाति, सर्प के बीज के सिर को कुचलेगा। इस पद में पौलुस ने कहा कि जब मसीह वापस आयेगा तो शैतान मसीही लोगों के पाँवों तले कुचला जाएगा। मसीह स्वयं शैतान को और हमारे शक्तिशाली दुश्मन, मौत को नष्ट कर देगा। तब हम लोग मसीह के साथ विजय और महिमा में राज करेंगे।

प्रकाशितवाक्य

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नए नियम में ऐसा एक ऐसी पुस्तक है जहाँ उत्पत्ति 2-3 के विषय राज्य की परिपूर्णता से संबंधित हैं। यूहन्ना ने इस पुस्तक में कई मौकों पर जीवन के वृक्ष का हवाला दिया। प्रकाशितवाक्य 2:7 में यूहन्ना जिस तरीके से इस बात को कहता है उसे सुनिए:

> जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा। (प्रकाशितवाक्य 2:7)

यहाँ पर उत्पत्ति 3 के लिए संकेत स्पष्ट है। हम जानते हैं कि आदम और हव्वा को इसीलिए अदन की वाटिका निष्कासित कर दिया गया था ताकि वे जीवन के वृक्ष से फल न खाएं। फिर भी, जब मसीह वापस आएग, तो परमेश्वर अपने लोगों को जीवन के वृक्ष से खाने का अधिकार देगा। इस पर भी ध्यान दें कि यह वृक्ष कहाँ स्थित है। यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह "परमेश्वर के स्वर्गलोक में" है। जिस तरह मूसा ने इस्राएल को कनान देश में प्रवेश करने के लिए बुलाहट दी क्योंकि वहाँ लम्बा जीवन पाया जा सकता था, वैसे ही मसीही लोगों के पास उससे भी बढ़कर, पूर्ण रूप से पुनर्स्थापित स्वर्गलोक में प्रवेश करने की अपनी आशा है।

तीसरे स्थान पर, उन लोगों की पहचान में जो उस वृक्ष में से खायेंगे और उत्पत्ति में एक और संबंध देखते हैं। यूहन्ना ने कहा कि "जो जय पायेगा उसे" अधिकार दिया जायेगा। जिस तरह मूसा ने इस्राएल को परमेश्वर के प्रति वफादार बनने के लिए प्रोत्साहित किया, उसी तरह यूहन्ना ने समझाया कि केवल वह जो वफादार रहने के द्वारा पाप पर विजय पाता है वही जीवन के वृक्ष से खाने पायेगा।

अंत में, हमें प्रकाशितवाक्य 22:1-2 को देखना चाहिए। जब यूहन्ना ने आने वाले नए संसार की ओर देखा, तो जो उसने देखा वह यह है:

> फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। (प्रकाशितवाक्य 22:1-2)

नए नियम का दृष्टिकोण साफ है। जब मसीह अपने राज्य की परिपूर्णता में वापस लौटता है, तो वे जो मसीह पर विश्वास करते हैं अदन के स्वर्गलोक में प्रवेश करेंगे। शैतान हमारे पाँवों तले कुचला जाएगा और हम जीवन के वृक्ष में से खायेंगे और परमेश्वर की नई सृष्टि में हमेशा के लिए रहेंगे।

उपसंहार

इस पाठ में हमने देखा कि मूसा ने इस्राएलियों को प्रतिज्ञा किए हुए देश की और ले जाते हुए उनकी मदद के उद्देश्य से वाटिका में आदम और हव्वा के बारे में लिखा। उसने अदन की वाटिका की घटनाओं में पीछे जाने और उन गलती को सुधारने के लिए इस्राएल देश को बुलाहट दी थी। कई मायनों में, इस वचन का संदेश आज हमारे लिए भी ठीक वैसा ही है। प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर आगे बढ़ने के लिए इस्राएल को दी गई मूसा की बुलाहट को सुनने के द्वारा, हम देख सकते हैं कि किस तरह हमें भी आदम और हव्वा के गलत क़दमों में पीछेजाने, उस पर विचार करने, और दुबारा वैसा नहीं करना चाहिए। मसीह पर भरोसा एवं उसके प्रति वफादार बने रहने के द्वारा, हम खोए और पाए हुए, स्वर्गलोक के उद्धार को प्राप्त कर पायेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।